PATNA WOMEN'S COLLEGE 1940

Hindi

Explore–Journal of Research for UG and PG Students
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

अयोध्याकांड का पारिवारिक आदर्श

• अर्चना निधि • रागिनी • नम्रता मित्रा
• शरण सहेली

Received : November 2013
Accepted : March 2014
Corresponding Author : Sharan Saheli

Abstract : हिन्दी ही नहीं विश्व साहित्य के सर्वकालीन महानतम साहित्यकारों में अग्रगण्य गोस्वामी तुलसीदास की रचनाएँ साहित्य की धरोहर हैं। यद्यपि इस जनकवि को अनेक उपाधियों से विभूषित किया गया, परंतु आज भी उनकी लोकप्रियता जनमानस के कवि-तुलसी के रूप में है। घर, परिवार और समकालीन समाज से प्रताड़ित होते रहने के बावजूद वो निरंतर पारिवारिक आदर्शों तथा नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिए प्रयासरत रहे। 'रामचरित मानस' और विशेषतः 'अयोध्याकांड' के माध्यम से उन्होंने राजनीतिक, सामाजिक और पारिवारिक आदर्शों की स्थापना की।

अर्चना निधि
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2011–2014), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

रागिनी
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2011–2014), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

नम्रता मित्रा
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2011–2014), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

शरण सहेली
एसोसिएट प्रोफेसर-सह-अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, पटना वीमेंस कॉलेज,
बेली रोड, पटना – 800 001, बिहार, भारत
E-mail : sharansaheli@gmail.com

प्रश्नावली द्वारा छात्राओं, संभ्रांतजनों एवं श्रमिक वर्गों के विचार जानने का प्रयास किया गया। सामान्य रूप से यह जानने का प्रयास किया गया कि तुलसीकृत रामचरितमानस के अयोध्याकांड का पारिवारिक आदर्श क्या आज भी प्रासंगिक है?विशेष रूप से यह भी जानने का प्रयास किया कि क्या यह 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का आदर्श स्थापित करने में सक्षम है?

संकेत शब्दः- कालजयी, अग्रगण्य, प्रासंगिकता, पारिवारिक मूल्य, विश्व-बंधुत्व

भूमिका :

हिन्दी ही नहीं विश्व के सर्वकालीन महान कवियों में अग्रगण्य गोस्वामी तुलसीदास जी भक्ति के क्षेत्र में जितने महान थे, उतने ही कविता के क्षेत्र में भी। रामचरित्र की व्यापकता में उन्हें अपनी कला के संपूर्ण कौशल के विस्तार का सुयोग प्राप्त हुआ – ''सर्वकवि की दृष्टि जितनी व्यापक और सर्वग्राही होनी चाहिए, वैसी ही दृष्टि उनकी थी। समाज के विकृत स्वरुप पर दृष्टि देकर उन्होंने उसके उद्धार का उपाय भी सोचा। उनकी यह प्रतीती थी कि राम के बिना समाज का कल्याण नहीं हो सकता। राम के इसी स्वरूप को जन-जन में पहुँचाने का बीड़ा उन्होंने उठाया और अपने प्रयत्न में उन्हें सफलता मिली। ऐसी सफलता जैसी और हिन्दी कवि को नहीं मिली।'' (सिंह 1976, 41)